Ministry of Housing and Urban Affairs
Government of India

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

# अगामी

# कहानियाँ सशक्तिकरण की

NFSSM
Alliance

## शीतल किन्नर

कटक
उड़ीसा

## ओ लैला

वरंगल
तेलंगाना

## मंटू नैक

ढेंकानाल
उड़ीसा

## पी नागमणी

वरंगल
तेलंगाना

## स्नेहल भोसले

वाई
महाराष्ट्र

## तेजस्विनी गायकवाड़

वाई
महाराष्ट्र

## रेशमा सोनी

जशपुर
छत्तीसगढ़

## शोभा येखंडे

सिन्नर
महाराष्ट्र

## बाँकी रानी सवाई

भुबनेश्वर
उड़ीसा

## एम दिविया

सठनुर
तमिल नाडु

## चिथ्रा

त्रिची
तमिल नाडु

## एस कमलम

त्रिची
तमिल नाडु

## माया बाई

गंजबासौदा
मध्य प्रदेश

## मधु सिंह

लखनऊ
उत्तर प्रदेश

## सुरेश जेना

ढेंकानाल
उड़ीसा

COVID - 19 की वैश्विक महामारी के चलते, ये फ़्लिप बुक, आपके सामने उन सशक्त लोगों की कहानियों को प्रस्तुत करती है जो महामारी के इस दौर में ढाल बनकर सबसे आगे खड़े हैं। हर व्यक्ति की अद्वितीय कहानी ये बताती है की किस प्रकार ये स्वच्छता योद्धा भारतीय सफ़ाई आंदोलन का चेहरा बन सामाजिक स्तर पर अपना महत्वपूर्ण  योगदान दे रहे हैं। हर तकलीफ़ और समस्या से उठकर, इनके काम ने बेहिसाब जीवनों को एक वैश्विक महामारी से बचाकर रखा है। ये इनकी कहानियाँ हैं।

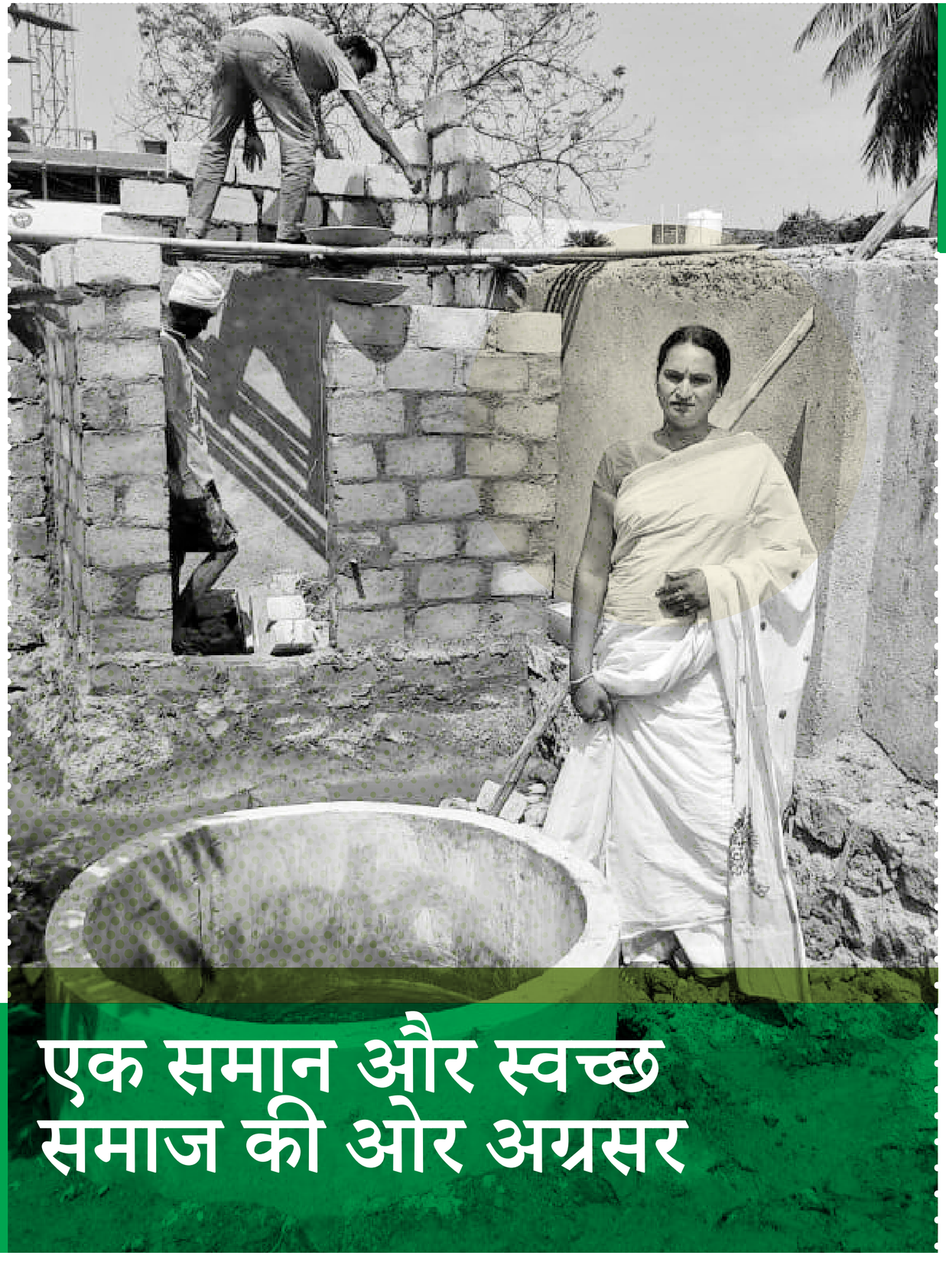

# ओ लैला

## वरंगल तेलंगाना

“हमें समाज इस तरह नकारता है की हम अपनी आम ज़रूरतें भी पूरी नहीं कर पाते। भीख माँगना एक इज़्ज़तदार रास्ता नहीं है। और हम इज़्ज़त के लायक़ हैं। ऐसी बहुत सारी मुश्किलें हैं जिनका सामना करना होगा, परंतु ये देखकर सांत्वना मिलता है की कुछ लोग इस सफ़र में हमारी सहायता कर रहे हैं। मेरी ये इच्छा है की इसी तरह मैं अपने समुदाय की भी मदद कर सकूँ।”

# एक समान और स्वच्छ समाज की ओर अग्रसर

वरंगल, तेलंगाना की प्रवासी ओ लैला के कंधों पर अपने समुदाय की ज़िम्मेदारी है। एक मुश्किलों से भरे अतीत के बा-वजूद, जहां उनकी ट्रांसजेंडेर पहचान पर बार बार सवाल उठाए गए, लैला ने अपने समुदाय का प्रतिनिधित्व करने का निर्णय लिया। एक बेहद सहनशील हस्ती, लैला अपने अतीत के बारे में ज़्यादा बात नहीं करतीं। बल्कि, इतनी सामाजिक अस्वीकृति के बा-वजूद, लैला ने अपने आप को शिक्षा के ज़रिए सशक्त करने का फ़ैसला किया।

लैला एक पोस्ट ग्रेजुएट हैं और शिक्षा को व्यक्ति का भविष्य बनाने में महत्वपूर्ण समझती हैं। इसके चलते उन्होंने  अपने समुदाय को शिक्षा की अहमियत सिखाने का निर्णय लिया। लैला ये मानती हैं की हर काम में  उनके समुदाय के लिए एक जगह होनी चाहिए, ताकि वो जीवन को सम्मान से जी सकें। अपने नेतृत्व की गुणवत्ता और पक्के इरादों की वजह से लैला अपने समुदाय की औरतों को साथ लाकर एक एन.जी.ओ. का निर्माण कर सकीं  जिसका नाम है मॉडर्न अवेर्नेस सॉसाययटी (MAS)। MAS २००४ में शुरू की गयी थी और प्राथमिक तौर से ट्रांसजेंडेर समुदाय और शहरी ग़रीबों की सामाजिक तकलीफ़ों पर काम करती है। आज, अपनी कार्यशीलता के कारण, वरंगल में सात ट्रांसजेंडेर स्वयं-सहायता-समूह बन चुके हैं।

लैला ने परिश्रम कर मान्यता हासिल की है। जून २०२० में वरंगल म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन द्वारा MAS को एक सामूहिक शौचालय की ऑपरेशन और रख-रखाव की ज़िम्मेदारी सौंपी गयी थी। ये कॉंट्रैक्ट MAS और लैला के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है क्यूँकि इसकी वजह से उनके जीवन और काम को इज़्ज़तदार नज़रिए से देखा जाने लगा है।

लैला सिटी-सैनिटेशन-टास्क-फ़ोर्स (CSTF) की भी एक सदस्य हैं। इस किरदार के साथ, लैला ने अपने समुदाय की आवाज़ बनने की ज़िम्मेदारी भी ली है, एक आवाज़ जो ट्रांसजेंडेर समुदाय के लिए शौचालय ना होने के विषय को उठाती है। इस फ़ोर्स का एक सदस्य होने के सामर्थ्य को वो GWMC द्वारा स्वच्छता रखने के सारे फ़ैसलों में पूर्णतः इस्तेमाल करती हैं। ट्रांसजेंडेर समुदाय को शौचालय दिलवाने की सुविधा पर लगातार काम करती लैला इस समुदाय में स्वच्छता के और ज़रिए ढूँढने की ओर अग्रसर हैं।

**जीवनी: Administrative Staff College of India**

# इज़्ज़त और आय : जीवन के दो स्तम्भ

## शीतल किन्नर
### कटक उड़ीसा

**“ट्रांसजेंडर समुदाय एक अनौपचारिक शेत्र का हिस्सा है और इसके बहुत सारे लोग अपनी रोज़ी रोटी हाइवे, ट्रेंज़ और सड़कों पर भीख माँगने और पेशेवर सेक्स वर्क से कमाते हैं। महामारी और लाक्डाउन ने इन्हें और कमज़ोर कर दिया है क्यूँकि अब ये गुज़र बसर करने में भी असक्षम हैं। हम बहुत ख़ुशक़िस्मत हैं की हमें कटक म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन के साथ एक कठिन समय में काम करने को मिला और आज हमारे पास मासिक महंताना आता है।”**

शीतल के जन्म पर उनका नाम चंदन रखा गया था और उन्हें एक मर्दाना परवरिश के साथ उड़ीसा, जगतसिंघपुर के एक संयुक्त परिवार में बड़ा किया गया। शीतल अपने प्रारंभिक जीवन में ही शोषण और सामाजिक भेद-भाव का शिकार हो गयीं जिसकी वजह से उन्होंने लगभग अपना आधा जीवन अकेलेपन में गुज़ारा। इस वजह से उन्हें हमेशा अपने अस्तित्व पर एक प्रश्न चिह्न लगा दिखा। घर में नज़र-बंद होकर रहने वाला चंदन दूसरी ओर अपने समुदाय में शीतल बनकर रहती थी। ये दोहरी ज़िंदगी शीतल पर एक बोझ बनती जा रही थी।

२००५ में जब वो उड़ीसा वापस आयीं, शीतल का परिचय ट्रांसजेंडर समुदाय से उनके गुरु के ज़रिए हुआ। अपने सम्प्रदाय के सहयोग से उन्होंने अपना नाम चंदन से शीतल किन्नर कर लिया और वहीं से सामाजिक गतिविधियों में ख़ुद को शामिल कर लिया। संचार और नेतृत्व के कौशल के चलते २०१९ में शीतल ने कटक के चुनाव में भाग लिया। कटक की आवाम से बेहतरीन प्रतिक्रिया मिलने से शीतल में आत्मविश्वास का इज़ाफ़ा हुआ। वो चुनाव जीती तो नहीं, मगर लोगों के दिलों में घर कर गयीं।

२०१९ में शीतल की आकांक्षाओं ने ‘बहुचरमाता’ का निर्माण किया, जो की एक ट्रांसजेंडर स्वयं सहयोग समिति है। इस समिति ने फेनयल और साबुन के उत्पादन से काम शुरू किया और आगे जाकर और NGOs का सहयोग भी किया जो सेहत ऐवम स्वच्छता के लिए कार्यशील थे। उनके काम ने उन्हें कटक म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन के समीप मान्यता दिलवायी। तत्पश्चात् , ‘बहुचरमाता’ का चुनाव सीएमसी द्वारा कटक के SePT (फाएकल स्लज एंड सेप्टेज मैनज्मेंट) को चलाने के लिए हुआ। इससे उन्हें रोज़गार ऐवम सम्मान भरा काम मिला।

‘बहुचरमाता SHG’ के दस सदस्यों को ऑन-साइट प्रशिक्षण दिया गया ताकि वो SePT की महत्ता को समझ सकें, प्लांट के रख रखाव ऐवम कार्यशीलता का ख़याल रखें और रोज़ाना साफ़ सफ़ाई के कार्य को निभाएँ। उनकी ट्रेनिंग एक सतत कारोबार के प्रयोजन में भी की गयी ताक़ि वो प्रतिनिधित्व, संचार और समस्या निरोधों से भी आगाह हो सकें।

कटक म्यूनिसिपल कॉर्पोरेशन के साथ इस साझेदारी से उन्हें अपने अस्तित्व और ताक़त का अनुमान हुआ है। उन्होंने भीख माँगने से बहुत आगे बढ़कर स्वच्छता और समाज के लिए काम किया है। सर्विस कॉंट्रैक्ट के मुताबिक़, हर सदस्य को १०,००० मासिक महंताना मिलता है। ‘बहुचरमाता’ के सदस्य अब इस एसएचजी को  अपनी बुलंद आवाज़ समझते हैं जिसके ज़रिए वो अपनी शक्ति का आँकलन कर उम्मीद और महंताने से खुद को और पूरे समुदाय को अच्छी ज़िंदगी दे पाएँगे। शीतल कहती हैं, ‘एसएचजी की ज़िम्मेदारी हमारे सर का ताज है और हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि भी’।

**जीवनी: Ernst & Young**

# एक स्वच्छता योद्धा की कोई उम्र नहीं होती

## स्नेहल भोसले
## वाई
## महाराष्ट्र

**“अगर ये मैं कर सकती हूँ तो ये कोई भी लड़की कर सकती है। मेहनत से काम करने से ही सम्मान हासिल होता है और उससे लोग आपकी बात सुनने के लिए रज़ामंद होते हैं। लड़कियों और औरतों को अपना व्यवसाय चुन्ने की आज़ादी होनी चाहिए। इससे जो उनको असल तजुर्बा मिलता है वो आगे के जीवन के लिए लाभदारी होता है। श्रेष्ठ कर्मचारी होने का ये पुरस्कार मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि है।”**

२२ साल की स्नेहल भोसले एक व्यवसाय प्रोत्साहित लड़की हैं। स्नेहल FSTP में टाइड टेक्नोक्रेटस के लिए वाई, महाराष्ट्र में साइट-प्रभारी हैं। उन्होंने कामयाब तरीक़े से प्लांट के लगने के समय से कार्यभार उठाया हुआ है और वो स्वच्छता क्षेत्र का हिस्सा होने में गर्व करती हैं।

स्नेहल फ़िलहाल एंजिनीरिंग में बैचलर्ज़ की पढ़ायी कर रही हैं। वो रौतवादी में रहती हैं जो की वाई से कुछ २६ किलॉमेटर की दूरी पर है। एंजिनीरिंग के पढाई के कारण उनका रुझान तकनीकी तजुर्बे की तरफ़ हुआ जिसकी वजह से उन्होंने FSTP में साइट-प्रभारी के पद के लिए अर्ज़ी डाली।

इब्तिदायी दौर में कुछ चुनौतियाँ भी आयीं जैसे की काम का माध्यम समझना, पुरुष स्टाफ़ को सम्भालना और FSTP तक पहुँचना क्यूँकि वो उनके घर से दूरी पर था। मगर समय और पारिवारिक सहयोग के साथ स्नेहल ने इन सभी मुश्किलों को सफलता पूर्वक पार किया।

स्नेहल अपने समुदाय में Faecal Sludge ऐवम Septage प्रबंध के इर्द-गिर्द लगातार जग्रुकता पैदा कर रही हैं। उनके परिवार को उनकी उपलब्धियों पर बेहद फ़ख्र है, जिसकी वजह से उन्होंने स्नेहल को अपार सहयोग से नवाज़ा है। स्नेहल अपनी पढ़ायी और काम को एक साथ दक्षता से कर पा रही हैं क्यूँकि उनका परिवार उनकी हिमायत कर रहा है।

COVID 19 की वजह से शुरू के तीन महीनों में स्नेहल को बहुत चुनौतियों का सामना करना पड़ा क्यूँकि कर्मचारी बीमारी के डर से काम पर आने को राज़ी नहीं थे। मगर, स्नेहल ने TIDE Technocrats टीम की मदद से कर्मियों में विश्वास पैदा किया की कैसे उनकी सुरक्षा सर्वप्रथम है। FSTP महामारी के दौर में भी पूरी सक्षमता से काम कर रहा है और इससे बड़ी कामयाबी की बात और कोई  नहीं।

**जीवनी: Center for Water and Sanitation, CRDF, CEPT University**

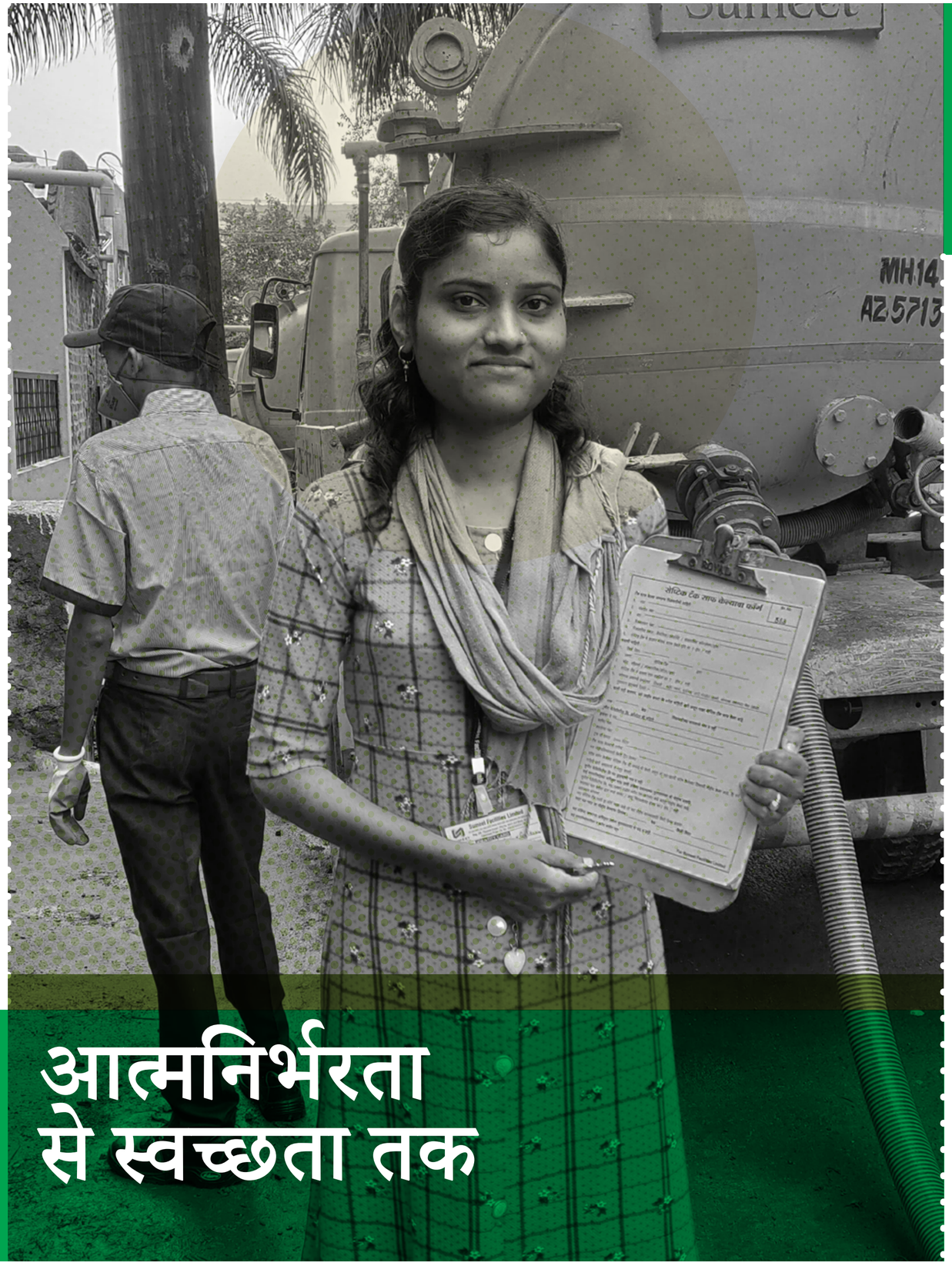

# तेजस्विनी गायकवाड़

## वाई महाराष्ट्र

**“हर दिन अपने साथ नए सबक़ और चुनौतियाँ लेकर आता है। मगर हर इंसान को अपने काम के प्रति सही रवैया रखना चाहिए। सहयोग बेशक़ ज़रूरी है और आपके क्षेत्र की शिक्षा को बढ़ाता है। नागरिक, ख़ासकर औरतें सुरक्षित महसूस करती हैं जब उनकी पर्यवेक्षक एक औरत होती है। मेरे परिवार ने हमेशा मुझे बढ़ावा दिया है। मुझे गर्व है अपने काम पर और मैं ख़ुश होती हूँ जब लोग मेरे बहादुर और आत्मविश्वासी होने की तारीफ़ करते हैं। मेरे स्वच्छता क्षेत्र में काम करने से मुझे ये प्रशंसा मिलती है।”**

# आत्मनिर्भरता से स्वच्छता तक

तेजस्विनी गायकवाड़ एक scheduled emptying supervisor के पद के लिए वाई, महाराष्ट्र में काम करती हैं। मेनवली नामक एक छोटे गाँव की प्रवासी जो की वाई से कुछ ४ किलॉमेटर की दूरी पर है, २४ वर्षीय तेजस्विनी ने अपनी उच्च माध्यमिक शिक्षा विज्ञान में पूरी की है।

बहुत म उम्र में ही तेजस्विनी को ये एहसास हो गया की उन्हें अनुभव लेकर और आत्मनिर्भर होकर अपनी शिक्षा का खर्चा ख़ुद उठाने में दिलचस्पी थी। इसलिए उन्होंने काम के लिए सुमीत फ़सिलिटीज़ प्राइवट लिमिटेड में पर्यवेक्षक के पद के लिए अर्ज़ी डाली।पर्यवेक्षक का काम था scheduled desludging के काम का निरीक्षण करना और वो इस पद के लिए चुन ली गयीं। उन्हें इस बात का एहसास था की ये अवसर उनके लिए बेहद महत्वपूर्ण है। उनके काम में बहुत सारी चीजें शामिल थीं; उन्हें नागरिकों से बोल-चाल में रहना था, क्षेत्रीय स्टाफ़ और वाई म्यूनिसिपल काउन्सिल से भी बात करते रहनी थी।

तेजस्विनी को इस चीज़ का एहसास हुआ की उन्हें अपने संचार पर और परिश्रम करने की ज़रूरत है ताकि वो रोज़मर्रा के संचालन का ख़याल रख सकें। फ़ैसले लेना मुश्क़िल था क्यूँकि उनमें वाहनों की तकनीकी मुश्किलात शामिल थी।
साइट के काम के साथ, उन्हें ऑफ़िस के दूसरे काम भी सम्भालने थे; मासिक बिल्ज़ का भक्तान, रोज़ के अप्डेट्स, प्रतिदिन स्वच्छता कर्मियों से बात करना इत्यादि। पारिवारिक सहयोग के साथ तथा Centre of Water and Sanitation (CWAS) टीम और WMC की मदद से तेजस्विनी ने काम सीख लिया और ध्यान रखा की संचालन ठीक से हो। और बेहतरी से काम करने के लिए उन्होंने अपनी समय पाबंदी और निर्णय सक्षमता पर सुधार किया। इस प्रकार तेजस्विनी ने एक व्यवसाय को महज़ पैसा कमाने का ज़रिया ना बनाते हुए एक ऐसा माध्यम बनाया जो उन्हें अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर धकेलकर और आत्मनिर्भर बनाए।

**जीवनी: Center for Water and Sanitation, CRDF, CEPT University**

# स्वच्छता और अविष्कार का आलिंगन

## बाँकी रानी सवाई
### भुबनेश्वर उड़ीसा

**“बरभुजा के लोगों ने मुझे मुश्क़िल समय में बहुत सहयोग दिया है और अब मेरी बारी है उनकी मदद करने की। कम क़ीमत वाला पद-कार्यशील ये हाथ साफ़ करने की मशीन हमारा अविष्कार है और मुझे गर्व है की मैं इसका एक हिस्सा हूँ।”**

बाँकी रानी सवाई एक जज़्बेदार महिला हैं; उनकी कहानी ये बताती है। एक ४४ सालाना बरभुजा, भुबनेश्वर, उड़ीसा की प्रवासी, रानी की ज़िंदगी बहुत सारी मुश्किलों से भरी हुई है। बाँकी रानी उन प्रवासियों में से एक हैं जो २००३ में धेंकल के कामाख्या नगर से भुबनेश्वर काम की तलाश में आयीं थी। वो यहाँ बसने लगे थे और जीवन सुधर रहा था। मगर अचानक २००९ में एक हादसा हुआ और उनके पति का देहांत हो गया। बाँकी रानी ने एक अकेली माँ बनकर दो बच्चों को बड़ा किया और घर की एकलौति कमाने वाली महिला बनकर हर चीज़ सम्भाली। उनके पास अपने अंदर आत्मविश्वास और दृढ़ता लाने के अलावा और कोई रास्ता नहीं था।

एक ग्रैजूएशन सर्टिफ़िकेट और कौशल के अम्बार के साथ, रानी को नौ साल लगे एक ऐसी नौकरी ढूँढने में जिससे उन्हें प्यार हो। २०१७ में, उन्होंने बरभुजा में आंगनवाड़ी का कार्यभार सम्भाला।”इससे मेरे जीवन को एक नया मतलब मिला। मेरे पति के जाने के बाद, जब मैं बहुत हताश महसूस कर रही थी, बच्चों की देख रेख करने वाले इस काम ने मुझे जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित किया।”

२०१८ से, बाँकी रानी सम्मिलित WASH प्रोजेक्ट की एक महत्वपूर्ण आवाज़ बन गयीं जो की Centre for Advocacy and Research (CFAR) के साथ निर्मानित हुआ था। ये काम Bhubaneshwar Municipal Corporation (BMC) के साथ सिम्मिलित होकर किया गया। बाँकी रानी ने, Community Management Committe और Single Window Forum के सहयोगियों के साथ मिलकर WASH सर्विसेज़ की बेहतरी के लयें काम किया। उनके साथ काम करती ममता मोहंती, कंकलता बिस्वस, भाबिनी प्रधान ऐवम चंद्रमा बहरा जैसी महिलाएँ शामिल थीं जो पूर्णतः उनके सहयोग में खड़ी थी। ज़रूरतों का आँकलन करना, घरों की लिस्ट बनाना, शौचालयों का निर्माण देखना, शौचालयों को सीवरेज लाइन से जोड़ने का काम देखना, डेसलूदजिंग करवाना और पानी बूथ लगवाने तक के सारे काम BMC के साथ करवाए गए। बाँकी रानी, एक नदी की तरह काम करती रहीं और ममेरे और बच्चों की देख रेख WASH se जोड़ने में कामयाब हुईं। फ़ानी और COVID -19 जैसे वैश्विक संकटों में नेतृत्व करती रानी ने हर परिश्तिथि को आगे से झेला। लोगों को साइक्लोन सेंटर्ज़ तक ले जाने से लेकर आवाम में राशन बाँटने तक, रानी ने हर इंसान का सहयोग किया है।

सरकार के दिए हुए दिशा निर्दशों के चलते रानी ने अपने सहयोगियों की मदद से आबादी वाले क्षेत्रों में COVID 19 से बचाव के लिए पद-कार्यशील हाथ साफ़ करने वाली मशींज़ लगवायी। एक मशीन हर सड़क पर लगी जहां बुजुर्गों और कमज़ोर लोगों को इससे सहयोग मिल सके। जब उनसे पूछा जाए की वे किस चीज़ के कारणवश ज़्यादा उत्सुक हैं, वे जवाब देती हैं,” हम बच्चों में लगातार हाथ धोने की इस आदत को बढ़ावा दे सकते हैं ताकि वे सुरक्षित रहें और उनका वाइरस से सम्पर्क शून्य हो और कोई चीज़ व्यर्थ भी ना हो”।

**जीवनी: Centre for Advocacy and Research (CFAR)**

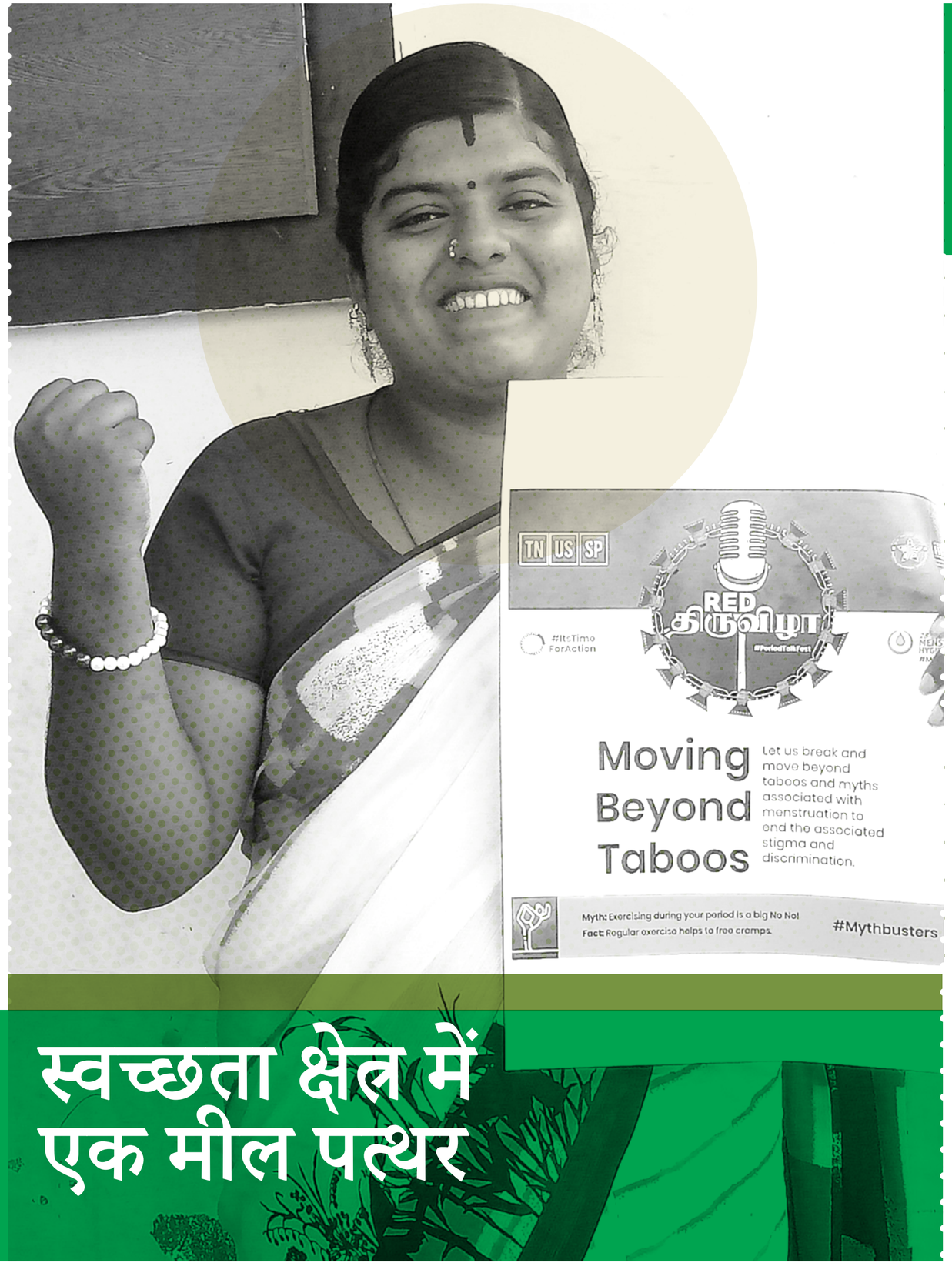


# स्वच्छता क्षेत्र में एक मील पत्थर

# एम दिविया
## सठनुर तमिल नाडु

**“बहुत लोग मुझे हैरानी से देखते हैं जब मैं अपने डीसलज़िंग ट्रक से उतरती हूँ और कई लोग तो मुझे कहते हैं की मैं मर्दाना व्यवहार रखती हूँ। मगर बहुत सारी और काम काजी महिलाएँ भी हैं जो मेरे सहयोग में खड़ी रहती हैं। उन्हें मेरा काम आरामदायक लगता है और वो मेरी ख़ैर खबर भी पूछती हैं जब मुझे सर्विस के लिए बुलाती हैं।”**

एम दिविया एक बेहद सुदृढ़ महिला हैं जिन्होंने अपना रास्ता एक ऐसे क्षेत्र में बनाया है जो अक्सर पुरुष वर्चस्व से लबरेज़ रास्ता माना जाता है।

थुंबई पट्टी, सिवगंगाई, तमिल नाडु में पैदा हुई एम दिविया का परिवार अल्पसंख्यकों की गिनती में आता था और उनके माता पिता दरियाँ बेचकर अपनी आय कमाते थे। ग़ुरबत में डूबा ये परिवार उनकी शिक्षा का बोझ बर्दाश्त नहीं कर सकता था इसलिए दिविया को बहुत कम उम्र में स्कूल छोड़ना पड़ा। जैसे ही वे १८ वर्षीय हुईं, उनकी शादी कर दी गयी।

परंतु शादी ग़रीबी की मुश्किल को कम नहीं करती। मणिमारन, उनके पति, जो की एक डीसलज़िंग ऑपरेटर था, महज़ १००-१५० रुपय प्रतिदिन कमाते थे, जिसमें से तक़रीबन सारा पैसा वो शराब पर लगा देते थे। यूँही तीन साल गुज़र गए। अब, दिविया के तीन बच्चे हैं जिनका पालन पोषण उन्हें देखना होता था। घर की हालत दिन-बा-दिन बिगड़ती जा रही थी। दिविया ने निर्णय लिया की वो चीजों को आप ही नियंत्रित करेंगी।

चूँकि उनके पति एक डीसलज़िंग ऑपरेटर थे, उन्होंने इस अवसर को अपनी तरफ़ किया और एक डीसलज़िंग ट्रक ख़रीदने का फ़ैसला किया। मगर, वह बेहद महँगा था; उनकी आय के हिसाब से ११ लाख का निवेश बहुत भारी था। मगर, क्यूँकि उन्होंने फ़ैसला कर लिय था इसलिए उन्होंने अपने पति को अपनी पुश्तैनी ज़मीन बेच देने के लिए एह्तमात में लिया। बिक्री से आए पैसे से दिविया ने ५ लाख की प्राथमिक पेमेंट दे ट्रक के लिए बाक़ी क़र्ज़ा लिया। कारोबार ने समय के साथ रफ़्तार पकड़ी और साथ ही उनके पति के नशे ने भी। इस वजह से उनके वित्त में ख़लल पड़ने लगी और वे हर महीने के अंत में अपना क़र्ज़ चुकाने से चूकने लगे। मगर दिविया हार मानने वालों में से नहीं थीं। इस बार, वे एक पुरुष प्रधान क्षेत्र में ख़ुद काम करने को निकलीं।

उनके पति के सहयोग से, उन्होंने डीसलज़िंग के काम की बारीकियाँ सीखीं और उनके साथ काम करना प्रारम्भ किया। इस तरह, उन्होंने ये भी ख़याल रखा की कोई पैसा नशे पर ना व्यर्थ हो। देख रेख और अनुशासन के साथ, उन्होंने ट्रक का क़र्ज़ चुका दिया। दिविया गरवांगित होती हैं जब वो डीसलज़िंग की बारीकियाँ बताती हैं या स्वच्छता चेन का महत्व समझाती हैं। वे मेन्स्ट्रूअल सफ़ाई पर भी जग्रुकता बढ़ाती हैं और ख़ुद के बचाव के लिए यंत्र बनाने में भी अपना सहयोग देती हैं ताकि डीसलज़िंग का काम अच्छे से हो सके। वे आज भी कहती हैं की लोग हैरान होते हैं जब वो एक महिला को एक डीसलज़िंग ट्रक में देखते हैं। जब वे अपना ये काम नहीं कर रही होती, उन्हें खाना पकाना बहुत पसंद है।

दिविया आज कलिंगा नगर में एक स्वयं सहयोग संघ चलाती हैं जो LIC कॉलोनी, सठनुर में है। इसकी मदद से वे एक घर ख़रीदने का क़र्ज़ ले पायीं हैं। आत्मविश्वास और दृढ़ता के साथ वे आज औरतों की सामाजिक ज़िम्मेदारियों को ललकारती, उनके परम्परागत रिवाज़ों के ख़िलाफ़ खड़ी हैं।

**जीवनी: Indian Institute for Human Settlements (IIHS)**

# हाशिए पर रहकर समाज का सशक्तिकरण

## एस कमलम

## त्रिची तमिल नाडु

**“मैंने कभी आमदनी के बारे में नहीं सोचा। वो मेरे लिए महत्वपूर्ण नहीं। मैं अपने शौचालय को साफ़ रखने में पूरी मेहनत करती हूँ। मैं ख़ुश हूँ की लोगों ने अब इसका एहसास किया है और सहयोग दिया है। मैं किसी ट्रांसजेंडेर समुदाय का हिस्सा नहीं हूँ। मुझे गर्व है की मैं किसी पर निर्भर नहीं हूँ। मैं काम करती हूँ, कमाती हूँ और अपनी माँ का ख़याल रखती हूँ। मुझे अपने प्रदेश के लोग पसंद हैं और मुझे प्रसनत्ता है की मैं अपनी भूमिका निभा पा रही हूँ।”**

एस कमलम की पैदाइश एक दूसरे शरीर में हुई थी। जन्म से मणिकन्दन, संगिलियंदपुरम के एक परिवार में जन्मे और बहुत जल्द अपने पिता को खो बैठे। उनकी परवरिश एक अकेली माँ ने की जो की एक मज़दूर थीं। मणिकंदन का बचपन बहुत रूखा था और जब तक वो १३ वर्षीय हुए, उन्हें एहसास हुआ की वे एक लड़की बनना चाहते थे, जो की सामाजिक उसूलों के ख़िलाफ़ था।

१६ साल में, कमलम ने ये फ़ैसला किया की ग़ुरबत उन्हें अपना अस्तित्व पहचानने से नहीं रोक सकती और उन्होंने अपने घर के साथ आमदनी चलाने के लिए एक दुकान खोल ली। मगर ये काफ़ी नहीं था। वो अपने काम से पहचानी जाना चाहती थीं। एक अवसर उनके सामने आया जब त्रिची सिटी कॉर्पोरेशन ने उनके क्षेत्र में एक सामाजिक शौचालय बनवाने का निर्णय लिया।

कमलम ने इस नए शौचालय की ज़िम्मेदारी लेने की अर्ज़ी डाली। डिस्ट्रिक्ट कलेक्टर का हुकुम था की ये पदवी एक महिला स्वयं सेवक संघ (SHG) के लिए आरक्षित है। मगर ये भी कमलम को झुका ना पायी और जल्द ही उन्होंने अपने आप को एक SHG में शामिल करवा लिया। उनका चुनाव हो गया और एक माध्यम मगर सटीक ५०-१०० रुपय प्रतिदिन की आय पर वे काम करने लगीं।

कमलम अपने काम से खुश हैं और कहती हैं की इससे उन्हें सराहना मिली है। City Inclusive Sanitation (CWIS), जो की स्वच्छता के काम को शहरों में बराबर की पदवी दिलवाना चाहती हैं, उनके साथ नज़दीकी से काम करने की वजह से कमलम ने सफ़ाई के क्षेत्र में व्यावहारिक बदलाव देखा है। अब, वे एक समुदाय ट्रेनर की शक़्ल में CWIS के साथ Tamil Nadu Urban Sanitation Support Programme पर काम करती हैं।

इस समय, कमलम अपने क्षेत्र के लोगों को स्वच्छता चेन और मेन्स्ट्रूअल सफ़ाई पर जागरूक कर रही हैं। वे लगातार सीखती हैं, पढ़ाती हैं और अपने इलाके में काम करती हैं। २०१९ में, त्रिची सिटी आयुक्त ने उनके काम को सराहना दी थी।

इन सब चीजों से कमलम का आत्मविश्वास बढ़ा है। COVID 19 की परिस्तिथि हर इंसान के लिए मुश्किलों का सबब बनी है, ख़ासकर वो जो सार्वजनिक शौचालय इस्तेमाल करके उसकी भरपायी नहीं कर सकते। कमलम को जैसे ही इस बात का एहसास हुआ, उन्होंने फ़ैसला किया की वो किसी से टिकट नहीं लेंगी और सारा नुक़सान ख़ुद सहेंगी। ये करने के लिए, कमलम ने अप्रैल में एक सब्ज़ी की दुकान खोल ली। कमलम को अब अपने इस काम पर फ़ख़्र है और वे उस समाज के लिए काम करती हैं जिसने उन्हें ठुकराया था। हर मर्हले को पार करतीं, कमलम ने बहुत सारे बांध तोड़े हैं और एक ट्रांस महिला के अस्तित्व को गले से लगाया है।

**जीवनी: Indian Institute for Human Settlements (IIHS)**

# एक जीवन स्वच्छता को सौंप देना

## माया बाई

## गंजबासौदा मध्य प्रदेश

**“मैं ३५ साल से एक स्वच्छता कर्मचारी की तरह नगर पालिका परिषद गंजबासौदा में काम कर रही हूँ और मैंने साफ सफाई के काम को हमेशा एक समाज सेवा समझ निभाया है। इस साल मैं निवृत्ति ले रही हूँ परंतु मैं अपनी बाक़ी की जिंदगी भी नागरिकों की सेवा में बिताउंगी।”**

माया बाई गंजबासौदा नगर पालिका परिषद, मध्य प्रदेश की एक सफाई कर्मचारी हैं। वे ३५ साल से शहरी लोकल बॉडी के साथ काम कर रही हैं। गंजबासौदा की एक प्रवासी, माया बाई और उनका समुदाय वार्ड २२, चूड़ी मोहल्ला की साफ सफाई के लिये जिम्मेवार है। एक आम सी स्वच्छता कर्मचारी, माया बाई ने एक बेहद गम्भीर परिस्तिथि का सामना किया जब COVID-19 शहर में फैल गया और ख़ासकर तब जब वार्ड २२ में, जो की एक निवास का क्षेत्र था। वहाँ पहला केस पाया गया। रात भर में, उनका काम का क्षेत्र अगले १४ दिन के लिए एक कंटेन्मेंट जोन बन गया। किसी को भी उस हिस्से में जाने की अनुमति नहीं थी मगर वहाँ के सामूहिक शौचालय की रोज की सफाई भी ज़रूरी थी। जब कोई भी इस काम को करना नहीं चाहता था तब माया बाई ने खुद ये काम करने का फैसला किया। इस अहम मकाम पर माया बाई ने ये काम लेकर अकेले ही वहाँ की साफ सफाई का जिम्मा उठाया।

लोकल अथॉरिटी ने उनके इस कर्तव्य निष्ठा की प्रशंसा की और वहाँ के नागरिकों ने उनके इस बहादुर काम की सराहना की।

उन्होंने सबको यह समझाया की सही PPE किट इस्तेमाल करना कितना जरूरी है, सही देख रेख और सोशल डिस्टन्सिंग के साथ, जिससे स्वच्छता का काम एक से पूरा हो सका । इससे दूसरे लोगों को भी प्रोत्साहन मिला और उन्होंने अपना काम फिर से शुरू किया।

माया बाई ने ३५ साल स्वच्छता क्षेत्र में काम किया है और वो इस साल निवृत्ति ले रही है। मगर वो आज भी आकुल हैं स्वच्छता में अपना योगदान देने के लिए, जैसे उन्होंने ३५ साल से दिया है।

**जीवनी: KPMG India**

# मधु सिंह

## लखनऊ उत्तर प्रदेश

**“मैं महिलाओं से अनुरोध करूँगी की वे अपनी असुरक्षाओं से बाहर निकलें और अपने कारोबार पर गर्व करें। हमें बदलाव लाने के लिए अपनी मानसिकता बदलनी होगी। भरपूर लाभ के लिए अपने टैंकर को रेजिस्टर करवाएँ।”**

# काम के निषेधों से आगे बढ़ते हुए

मधु सिंह और उनके पति, उपेन्द्र सिंह, जो की एक भूतपूर्व फ़ौजी हवलदार हैं, दोनो ही के पास कोई उद्यमी कौशल नहीं था। मधु, बा-वजूद एक गृहणी होने के, अपने पति की २०११ में ली जल्दी रेटायअर्मेंट के बाद अपने परिवार के सहयोग में डट कर खड़ी हुईं क्यूँकि उन्हें पता था की उनके बच्चों की शिक्षा दाँव पर थी। उन्होंने फ़ैसला किया की एक रूढ़िवादी रास्ता ना लेकर वो बतौर डीसलज़िंग टैंक ऑपरेटर काम करेंगी।उनके पति की भी इसमें सहमति थी।

१८ साल की उम्र में विवाहित मधु एक शांत स्वभाव की महिला हैं और बलदेव विहार, तेलीबाग, लखनऊ में एक संयुक्त परिवार और अपने तीन बच्चों के साथ रहती थीं। उनके पति, जो की एकलौते कमाने वाले थे, काम से हट चुके थे। उन्हें एक डीसलज़िंग ऑपरेटर में व्यावसायिक मुनाफ़ा दिखा। अपने पड़ोसी की मदद से जो की डीसलज़िंग क्षेत्र से थे, उन्होंने अपनी पूँजी इसमें लगा देने का निर्णय लिया।२०१३ में, उपेन्द्र सिंह ने एक बैंक से ७ लाख का क़र्ज़ मधु के नाम पर लिया ताकि ऑपरेशन शुरू हो सके। मगर, साथ ही, उन्हें एक बैंक में मुलाज़्मत मिल गयी, जो की उनके घर से ७५ किलोमीटर की दूरी पर था।

निवेश किया गया था और पीछे देखने का सवाल नहीं था। सामाजिक मानदंडों के ख़िलाफ़ जाते हुए, मधु ने एक पुरुष-प्रधान कार्यक्षेत्र में काम शुरू करने का फ़ैसला किया। उनके बच्चों और परिवार वालों ने उन्हें रोकने की कोशिश की मगर उनके पति ने सहयोग कर सभी को समझाया की हर काम इज़्ज़तदार होता है, लिंग संबंधी रूढ़ियां के बा-वजूद।

शुरुवाती दिन मुश्किल थे; ड्राइवर और बाक़ी मददगार काम में ध्यान नहीं देते थे और काम अनियमित तरीक़े से होता था। कारोबार के सारे सवाल और दाम वे फ़ोन पर पक्का करतीं थीं। साथ ही, तकनीकी ख़राबियाँ, अनियमित टिपिंग फ़ीस और अनुचित डीसलज़िंग जैसी मुश्किलें उन्होंने पार की। दृढ़ निश्चय और आराम भरे लहजे में कस्टमर को सम्भालने के कारण, मधु ने कारोबार के बहुत नियम सीखे और अपना क़र्ज़ समयबध चुका दिया। पहले, उनकी पारिवारिक आय ६००० रुपए थी और ८ लोगों का परिवार चलाना मुश्क़िल था। इस उद्यम के साथ, महीने का २०,००० कमाने से आज ये परिवार ६०,००० कमाता है और अपने बच्चों की शिक्षा और बचत जैसी ज़रूरतें पूरी कर पता है।

मधु PSI इंडिया की शुक्रगुज़ार हैं, जिन्होंने #ATP प्रोजेक्ट के कार्यान्वयन की अवधि में लखनऊ का एक टैंकर असोसीएशन बनाया और शहरी मापदंडो को प्राइवट सेक्टर में से पब्लिक सेक्टर में सम्मिलित किया। इस मंच ने उन्हें एक मौक़ा दिया व्यावसायिक चीजों को समझने के लिए और टिपिंग फ़ीस, डिस्पोज़ल साइट्स और रेजिस्ट्रेशन जैसी मुश्किलों को पार करने में। असोसीएशन को PSI ने सहयोग दिया ताकि वो COVID 19 के बा-वजूद काम जारी रखें और डीसलज़िंग और असोसीएशनज़ की रोज़गार चलती रहे।

मधु अब PTI की कार्यपालक हैं-सेप्टिक टैंकर ओपीरटर वेल्फ़ेर असोसीएशन (STOWA) की कामयाबी का और FSM जैसे एक पुरुष-प्रधान क्षेत्र में औरत के होने का प्रमाण है। मधु ये मानती हैं की रूढ़िवादी सोच और व्यवसाय से आगे बढ़ना ज़रूरी है ताकि ज़्यादा से ज़्यादा औरतें स्वच्छता अभियान से जुड़ने में सक्षम हों।

**जीवनी: Population Services International, India**

# सुरेश जेना

## ढेंकानाल उड़ीसा

**“मैंने कभी नहीं सोचा था की एक दिन मैं अपना काम राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मेहमानों को समझा पाऊँगा और मुझमें उन्हें जवाब देने का आत्मविश्वास भी होगा। अब मैं आसानी से FSTP में लागू ट्रीटमेंट की प्रक्रिया ऐवम मल को नियंत्रित रखने के क़ुदरती लाभ समझा सकता हूँ।”**

# अपनी क़िस्मत को पछाड़ स्वच्छता की ओर अग्रसर

सुरेश जेना को Faecal Sludge और Septage Treatment Plant (FSTP) में प्रबंधक के पद पर ढेंकानाल, उड़ीसा में भर्ती किया गया था। सुरेश, एक बारहवीं पास, ढेंकानाल म्यूनिसिपैलिटी से एक स्वच्छता पर्ववेक्षक के तौर पर जुड़े थे। उन्हें संचालन और देख रेख की ट्रेनिंग वास्तविक कार्य से मिली थी जिसके पश्चात उन्होंने प्लांट पर काम करना शुरू किया।

“हमारी ट्रेनिंग के बाद, मुझे Faecal Sludge और Septage Management के महत्व का एहसास हुआ; कैसे ये पर्यावरण और सामाजिक स्वास्थ्य को ठीक रखता है”, सुरेश कहते हैं। सुरेश ने एक लम्बा रास्ता तेय किया है। उनके पिता और परिवार के अन्य मर्द मैनुअल मैला ढोने वाले की भूमिका निभाते थे। इसलिए सुरेश अपनी क़िस्मत बदलने पर आमादा थे।

आज सुरेश मासिक १६००० की आय कमाते हैं और इस बात पर गर्व करते हैं की वे अपने घर पर पैसा ला रहे हैं। उनकी कृतज्ञता छलकती है जब वे कहते हैं, “इस समय जब जीवन और रोज़गार का कुछ नहीं पता, मैं ख़ुशक़िस्मत महसूस करता हूँ की मैं एक प्लांट पर काम कर रहा हूँ और एक मासिक महंताना कमा रहा हूँ”।

बा-वजूद इसके की ढेंकानाल का FSTP अब महिला स्वयं सेवक संघ (SHG) के नियंत्रण में होगा, ULB और SHG ने साथ मैं सुरेश को प्रभंधक पद पर बरक़रार रखने का फ़ैसला किया है। सुरेश का काम सराहनीय है।इस तब्दीली के बा-वजूद सुरेश ख़ुश हैं। “मैं SHG सहयोगियों को काम सिखाने में शामिल था और मुझे ख़ुशी होती है की अब वे प्लांट को सम्भलेंगे। ये भी अच्छी बात है की अब स्वच्छता की आधारिक संरचना ख़ुद सहयोगी अपनी इमारत से सम्भाल सकते हैं,” वे कहते हैं।

सुरेश ने और भी बहुत सारे राज्य और राष्ट्रीय नौकरशाहों से ढेंकानाल के FSTP में बात की है। ये उन्हें FSSM के बारे में और जानने को प्रोत्साहित करता है। “मैं FSTP के संचालन स्थिरता, मरम्मद और रख रखाव के बारे में और जानना चाहता हूँ”। सुरेश और बहुत लोगों को जो की फ़िलहाल अनौपचारिक स्वच्छता कार्यों में नियुक्त हैं FSSM का हिस्सा बना संवेदनशील बनाना चाहते हैं। “मुझे ख़ुशी होगी अगर मैं लोगों को संचालन और प्रबंधन में ट्रेन कर सकूँ। और उन्हें FSTP के प्रचलन और मैनुअल मैला ढोने के अभिशाप से आगाह कर सकूँ”, वे जुनून से कहते हैं।

सुरेश ULB के काम की सराहना करते हैं; उनकी लगातार कोशिशें हैं की किसी तरह मैन्यूअल मल उठाने वालों को दूसरा रोज़गार मिल सके।“में ढेंकानाल म्यूनिसिपैलिटी का शुक्रगुज़ार हूँ जिन्होंने मुझे ये अवसर दिया, ताकि मैं अपनी सक्षमता समझ प्लांट का संचालन कर सकूँ”। सुरेश उन मल उठाने वालों का भी सशक्तिकरण करना चाहते हैं जो मल स्वच्छता क्षेत्र में निर्मित, इज़्ज़तदार अवसरों के लायक़ हैं।

**जीवनी: Ernst & Young**

# मंटू नैक

## ढेंकानाल, उड़ीसा

**“समुदाय के दूसरे लोग अंदेशे में हैं क्यूँकि स्वच्छता के काम को एक कलंकित नज़र से देखा जाता है। मगर मैंने उन्हें किसी तरह समझाया और हमें ढेंकानाल, म्यूनिसिपैलिटी से कॉंट्रैक्ट मिल गया।”**

# सामाजिक सोच को बदलकर एक व्यवसायी बनना

मंटू एक रूढ़िवादी समुदाय में पैदा हुए जहां तक़रीबन सभी लोग स्वच्छता क्षेत्र में नियुक्त थे; इसलिए मंटू को बचपन से पता था की वे स्वच्छता के मैदान में ही काम करेंगे। मगर उनके सम्प्रदाय में ऐसा कोई भी नहीं था जो उन्हें आगे की शिक्षा के लिए मशवरा दे सके। इसलिए मंटू ने १०वीं तक की शिक्षा हासिल कर प्राइवेट कंपनियों में एक सफ़ाई कर्मचारी के रूप में काम करना प्रारम्भ कर दिया। उन्हें एक इज़्ज़तदार ज़िंदगी की दरकार थी, इसलिए उन्होंने पुलिस और फ़ौज में भर्ती होने की कोशिश की मगर उनके छोटे क़द के चलते, उनका चुनाव नहीं हो सका।

मंटू के माता पिता म्यूनिसिपल सफ़ाई कर्मचारी थे और उनकी आय बहुत कम थी जिसकी वजह से मंटू को अपने छोटे भाई और बहन की शिक्षा की देख रेख करनी पड़ी। उन्होंने फ़ैसला किया की वे म्यूनिसिपैलिटी में एक सफ़ाई कर्मी की नौकरी कर लेंगे। ८ साल, मंटू ने वहाँ ७००० रुपये मासिक महंताने के लिए काम किया।मगर शादी हो जाने के बाद, उनकी ज़रूरतें बढ़ीं।

एक दिन, उन्हें खबर मिली की ढेंकानाल म्यूनिसिपैलिटी के लोगों ने एक बैठक बुलायी है जहां DAY-NULM और SBM के अभिसरण से एक नयी पुरुष स्वयं सहयोग समिति (SHG) बनायी जा रही है। एक SHG के फ़ायदे समझने के बाद, वे एक सदस्य बन गए और फिर ओम् साई SHG के अध्यक्ष भी। वे SHG को आगे बढ़ाने लगे; वे रोज़ की बैठक लगाते, काम का संचालन करते, और सदस्यों के घरों का चक्कर लगा उन्हें निर्मित करते।

जैसे जैसे उन्होंने सीखा, वे नए ख़याल सबके साथ बाँटने लगे और SHG के सदस्यों को प्रोत्साहित किया की वे बचत करें ताकि आगे जाकर अंतरिय क़र्ज़े ले सकें और बैंक से लोन भी। उनके नतृत्व में, उनके समुदाय ने ढेंकानाल म्यूनिसिपैलिटी को एक अर्ज़ी डाली क्यूँकि सामुदायिक शौचालयों की ऑपरेशन और मैनज्मेंट में उन्हें दिलचस्पी थी। समुदाय के दूसरे लोग अंदेशे में थे क्यूँकि स्वच्छता के काम को एक कलंकित नज़र से देखा जाता है।मगर उन्होंने सहकर्मियों को किसी तरह समझाया और उन्हें ढेंकानाल म्यूनिसिपैलिटी से कॉंट्रैक्ट मिल गया।

६ महीने का २० सीटों पर एक O&M का कॉंट्रैक्ट मिला फ़रवरी २०१९ में। इस कॉंट्रैक्ट के आने के बाद, उन्हें पैसे की दिक़्क़त हुई, नियंत्रण की मुश्किलें आयीं, और समय नियंत्रण नहीं हो पाया क्यूँकि वे स्वच्छता कर्मी थे। उन्हें उनकी पहली पेमेंट मिली ढेंकानाल म्यूनिसिपैलिटी से जिसके बाद आय मिलना अनियमित हो गया

जिससे बहुत लोग हतोत्साहित हो SHG छोड़ कर चले गए। खर्चे बढ़ने लगे, और आमदनी मुश्क़िल से मासिक ५००० रुपए होती थी। फिर भी, मंटू ने समुदाय को साथ रखने की पूरी कोशिश की, ढेंकानाल म्यूनिसिपैलिटी से ऑपरेशन और मैनेजमेंट सीखा और अंदर की बचत से SHG चलाया।

इसी वजह से उन्होंने बदलाव को अपनाया और ढेंकानाल म्यूनिसिपैलिटी को काम दे मज़बूती से खड़े रहे।उनकी श्रद्धा, लगन और संचार की वजह से, SHG को अपना ७५,००० का महंताना मार्च २०२० में मिला। इस राशि में से उन्होंने ४०,००० से एक नया उद्यम खोला। बाक़ी के ३५,००० उन पाँच लोगों में बाँटे गए जोसामुदायिक शौचालय की सफ़ाई कर रह थे।

मंटू के नेतृत्व में अब ये SHG रोज़गार के और तरीक़े निकाल रहा है और इसने ढेंकानाल म्यूनिसिपैलिटी के समक्ष और काम देने की ऐवम सामाजिक शौचालयों का कॉंट्रैक्ट बढ़ाने की अर्ज़ी डाली है।

ढेंकानाल म्यूनिसिपैलिटी उनके काम से बेहद खुश है और मंटू के SHG ने अपने काम से उनका विश्वास जीत लिया है। वे मंटू और उनके SHG को और कांट्रैक्ट्स से नवाज़ने का सोच रहे हैं।

**जीवनी: Urban Management Centre (UMC)**

# नेतृत्व और कार्यशीलता का एक ख़ज़ाना

# पी नागमणी
## वरंगल तेलंगाना

**“इस SHG को शुरू करने की वजह से ना सिर्फ़ मुझे जीवन जीने का प्रोत्साहन मिला बल्कि दूसरी महिलाएँ भी एक रोज़गार कमाने लगीं।इस SHG ने मुझे वो बनाया है जो मैं आज हूँ। इसने मुझे समाज में एक इज़्ज़तदार जगह दी है। जिस नागमणी को आज आप देख रहे हैं वो सिर्फ़ CHELI की वजह से है।”**

तीन बच्चों में सबसे बड़ी पी नागमणी थीं।जैसा तक़रीबन सुना जाता है, उसके बिलकुल विपरीत, नागमणी की नागमणी की परवरिश बहुत स्नेह और दुलार के साथ की गयी। वे शादी के बाद पढ़ना चाहती थीं मगर उन्हें उसकी इजाज़त नहीं मिली। २१ साल की उम्र में ही वे दो बच्चों की माँ बन चुकीं थीं। मगर इसके बा-वजूद, उनके माता पिता ने उन्हें कभी कोई तकलीफ़ नहीं होने दी और उन्हें बिना किसी भेद भाव के बड़ा किया हालाँकि उनके परिवार की आर्थिक स्तिथि हमेशा ख़राब रही।

शादी के बाद वे उन महिलाओं में से थी जिन्होंने अपने पति की मदद की। उनके पति ने एक स्कूल खोला और वे उसका निरीक्षण करने लगीं। फिर वे वहाँ पर अध्यापिका बन गयी और २० साल तक काम करतीं रहीं। इस समय के दौरान उन्होंने SHG के बारे में TV अथवा रेडीओ से सुना। वे १९९९ से श्री चमुंडेश्वरी SHG की सदस्या हैं। एक सक्रिय सहयोगी ऐवम एक सामुदायिक रीसॉर्स, नागमणी ने ७०० महिलोआँ को SHG से जुड़कर आत्मनिर्भर होने के लिए प्रोत्साहित किया।

जब वे CHELI शुरू करना चाहती थीं, जो की एक सैनिटेरी नैप्किन का व्यवसाय है, तो उनके परिवार ने उन्हें भरपूर सहयोग दिया। एक व्यवसायी के तौर पर उन्होंने SHG की महिलाओं को काम पर रखकर उन्हें रोज़गार दिया। COVID 19 महामारी के दौरान, ग्लोबल शेपर्स कम्यूनिटी के सहयोग से उन्होंने शहरी गरीब महिलाओं की मदद की जो बॉम्बे की बस्तियों में रहती थीं। २०० महिलाओं में सैनिटेरी नैपकिंस बाँटे गए। CHELI ने उन्हे १०० नैपकिंस भेजे जिसका परिवहन का खर्चा उन्होंने उठाया। उन्होंने GWMC के कमिशनर तक भी UMC के ज़रिए ये पैग़ाम भिजवाया की वे वरंगल की सारी स्वच्छता कर्मी महिलाओं को COVID-19 के दौरान सैनिटेरी नैपकिंस भिजवाना चाहती थीं। कमिशनर की रज़ामंदी के बाद, CHELI के ११०० पैकेट्स उन महिलाओं को भिजवाए गए।

नागमणी अपने काम से साफ़ और कफ़ियती नैपकसि बनना चाहती हैं ताकि सभी शहरी औरतें उनका उपयोग कर सकें। उनका सपना है की वे जतिने महलि SHGs तक ये पहुँचा सकें, वे पहुँचाएँ।

**जीवनी: Urban Management Centre (UMC)**

# स्वच्छता का एक प्रतीक

# रेशमा सोनी

## जशपुर छत्तीसगढ़

**“मुझे सिवाए अंधेरे के कुछ नहीं दिख रहा था। स्वच्छ अम्बिकापुर मिशन ने मेरा जीवन बदल दिया। म्यूनिसिपैलिटी और सहयोगियों से मिले अपार प्रोत्साहन ने मुझे एक अच्छे भविष्य की ओर देखने को मजबूर किया है।”**

एक २३ वर्षीय महिला, रेशमा सोनी ग़ुरबत के बीच पठल गाँव के जशपुर डिस्ट्रिक्ट, छत्तीसगढ़ में बड़ी हुईं। पाँच साल पहले, वे अम्बिकापुर अपने पति और एक वर्षीय बेटे के साथ आयीं। जब वे यहाँ आयीं थी, उन्होंने अपने और अपने परिवार के अच्छे भविष्य के लिए कुछ सपने देखे थे।

मगर इससे पहले की वे कुछ समझ पाती, उनके पति की मृत्यु हो गयी। आय का कोई साधन ना होने के कारण और एक बच्चे की देख रेख करने के चलते उन्हें कोई रास्ता ना दिखता था। उम्मीद मिशन क्लीन सिटी अम्बिकापुर की शक़्ल में आयी जो स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत शुरू किया गया था। यहाँ उन्हें काम मिल गया।

आज रेशमा एक ‘स्वच्छता दीदी’ हैं जो ‘स्वच्छ अम्बिकापुर मिशन सहकारी समिति मर्यादित’ के अंतर्गत एक सूपर्वायज़र हैं जो चार कूड़ा कर्मचारियों को निर्मानित करती हैं। अपनी मेहनत से वे मासिक ६००० रुपए कमाती हैं और अपने बच्चे की शिक्षा पर लगती हैं।

रेशमा हमेशा से एक शांत स्वभाव की महिला रही हैं, इसलिए पहली चीज़ जिसपर उन्होंने काम किया वो थी उनकी संचार की सक्षमता। साथ ही, उन्होंने अपने नेतृत्व को प्रबल किया जिसकी वजह से सहयोगियों के साथ काम (एक) से होता था। वे एक स्वच्छता कर्मी बन आगे भी काम करना चाहती हैं ताकि एक काम के साथ वे अपने बच्चे की शिक्षा भी जारी रखें।

रेशमा रोज़ अपनी नीली और हरी साड़ी में तय्यार रहती हैं और ये अम्बिकापुर में स्वच्छता का प्रतीक बन गया है।

**जीवनी: KPMG India**

# एक शर्मीली गृहणी से एक SHG अध्यक्ष, एक महिला की कहानी

## शोभा येखंडे
### सिन्नर महाराष्ट्र

**“मेरे परिवार ने हमेशा मुझे प्रोत्साहित किया समाज के लिए कार्यरत होने के लिए। महामारी के समय भी, मैंने बहुत एहतियात करके ऑन-फ़ील्ड काम किया।”**

यदि हम ख़ुद को सुरक्षित रखें तो ये दुनिया भी सुरक्षित हो जाएगी’, कहती हैं शोभा येखंडे जो महालक्ष्मी SHG की अध्यक्ष हैं। उनका SHG कोरोना के इस दौर में तलवादी बस्ती, सिन्नर में सक्षम रहा है, जहां वे हाथ धोने की सहूलियत का आँकलन करते रहे हैं। एक ३८ वर्षीय शोभा तलवादी बस्ती की रहने वाली हैं और अपने काम में गर्व महसूस करती हैं।

तीन साल पहले तक, शोभा एक शांत गृहणी थीं, उनके पति और घरवालों ने फिर उन्हें प्रोत्साहित किया की वे घर से बाहर निकलें। तत्पश्चात् शोभा ने सिन्नर म्यूनिसिपल काउन्सिल के NULM डिपार्टमेंट में दाख़िला ले लिया और कुछ समय बाद वे SHG की अध्यक्ष बन गयीं।

उन्हें वो समय भी याद है जब NULM के प्रोजेक्ट मैनेजर और कोऑर्डिनेटर ने उन्हें संचार में बेहतर किया था और आत्मविश्वास से अपना काम करने का हौसला दिया था। उस वक़्त से उन्होंने म्यूनिसिपल काउन्सिल के साथ बहुत काम किया है; मल को अलग करना, बाढ़ से पीड़ित इलाक़ों में राहत का काम करना, वृक्ष उगाना आदि। आगे चलकर उन्होंने आतंरिक बचत खाते से ३०,००० रुपए लिए और ५०,००० SMC से ताकि वो एक सब्ज़ी की दुकान खोल सकें। SMC के NULM डिपार्टमेंट के ज़रिए उन्हें एक हस्त-सफ़ाई मशीन के संचालन का काम दिया गया जो शोभा ने ख़ुशी से स्वीकार किया। वे ४५ दिनों से उस हस्त-सफ़ाई मशीन का संचालन कर रही हैं। वे स्टेशन पर दिन में दो बार जाती हैं; सुबह के ७ बजे और शाम के ४ बजे। हर दौरे पर, वो ये देखती हैं की साबुन और पानी का प्रबंध है या नहीं और यदि स्टेशन में कोई भी मसला होता है तो वे SMC के स्वच्छता डिपार्टमेंट को आगाह कर देती हैं। ये स्टेशन उनकी दुकान के बिल्कुल सामने है जिसकी वजह से वे दुकान पर काम करते हुए स्टेशन पर नज़र रख सकती हैं।महामारी के समय में शोभा ना सिर्फ़ स्टेशन पर काम करती हैं बल्कि अपने आस पास स्वच्छता और हाथ धोने की अहमियत पर जग्रुकता भी पैदा करती हैं। और वे लोगों को याद दिलाती रहती हैं की इस स्टेशन का ख़याल रखा जाना चाहिए।

शोभा को समुदाय में हर कोई जानता है इसलिए लोग उनके पास स्टेशन से जुड़ी अपनी वेदनाएँ या शिकायतें लेकर आते हैं। जब उनसे पूछा जाता है की महामारी ने उन्हें काम करने से रोका या नहीं, वे दृढ़ निश्चय से कहती हैं की काम करने में कोई भय नहीं है। वे मास्क, ग्लव्ज़ और सोशल डिस्टन्सिंग जैसी चीजों का पुरज़ोर तरीक़े से पालन करती हैं और दूसरों को भी प्रोत्साहित करती हैं। इस सफ़र के दौरान, शोभा को अपने परिवार, अपने बच्चों से बहुत सहयोग मिला है और वो इसकी शुक्रगुज़ार हैं।

**जीवनी: Center for Water and Sanitation, CRDF, CEPT University**

# स्वच्छता से बचा एक जीवन

## चिथ्रा

## त्रिची तमिल नाडु

**“अगर सही समय पर पैसे ना आते, तो शायद मेरा बेटा और मैं आज ज़िंदा ना होते। हम पिछला महीना इसलिए गुज़ार पाए क्यूँकि हमारे पास IDFC फ़र्स्ट बैंक से मिली राशि का सहयोग था।”**

एक ६२ वर्षीय महिला, चिथ्रा अपने २० वर्षीय बेटे, आनंद के साथ थरनाल्लुर के साथ वाले इलाके में, त्रिची, तमिल नाडु में रहती हैं। छे माह पहले, उनके पति का देहांत हो गया था जिसके कारणवश, उनके परिवार की उत्तरजीविका के ऊपर एक साया आ गया। वो एक कबाड़ की दुकान में काम करते थे मगर अपनी सारी आमदनी शराब पर व्यर्थ कर देते थे जिससे उनके परिवार को एक पैसा भी ना मिलता। एक ऐसे इंसान के साथ रहने का मतलब था की चिथ्रा को आप ही अपने परिवार का लालन पालन करना पड़ता था। १००-१५० रुपए प्रतिदिन की आय में ४ बच्चों को पालना एक बहुत बड़ी मुश्क़िल थी।

कुछ महीने पहले, परेशानी कुछ और बढ़ गयी जब चिथ्रा की बच्चेदानी में एक दिक़्क़त आने की वजह से उन्हें जल्द-अज़-जल्द अपना इलाज करवाना था। COVID-19 की वजह से जब लाक्डाउन जारी हुआ तो उससे छे दिन पहले ही चिथ्रा घर वापिस आयीं थी, जिसकी वजह से काम के सारे ज़रिए बंद हो गए। एक ऐसी महिला जिसने हमेशा आत्मनिर्भरता से जीवन बिताया है, इस परिस्तिथि ने उन्हें खीज दिया था। उनका बेटा, जो बधिर है, वह एक मज़दूर है और दिन का १०० रुपया कमाता है। लाक्डाउन की वजह से अब इस परिवार के पास ख़ुद के पाँव पर खड़ा रहने का कोई रास्ता नहीं था। जैसे ही आय बिल्कुल ख़त्म होने को आयी, चिथ्रा को IDFC फ़र्स्ट बैंक से १५०० रुपए का सहयोग मिला।

चिथ्रा इंडीयन इन्स्टिटूट ओफ़ ह्यूमन सेटल्मेंट्स (IIHS) का हिस्सा हैं, एक ऐसी पहल जो शहरी सफ़ाई के लिए स्वच्छता कर्मियों के ज़रिए विकासशील है। उनके तीनों बच्चों की शादी हो चुकी है और वो अलग रहते हैं, जबकि आनंद को उम्मीद है की जैसे ही मंडियाँ खुलेंगी, वे काम खोज पाएँगे। इस दौरान, चिथ्रा अपनी सर्जरी से उभर रही हैं और इस महामारी से सशक्त बाहर निकलने की आशावादी हैं।

**जीवनी: Samhita Social Ventures**

Ministry of Housing and Urban Affairs
Government of India

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

NFSSM
Alliance

**डिज़ाइन: सौम्यजीत चकलादर, लेखिका: वृंदा वैद**